



Mr. Vijay Kumar Singh

15 Aug 1969

03:35 AM

Gopalganj

Model: All-Dosha-Report

Order No: 121608801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 14-15/08/1969
दिन _____: गुरु-शुक्रवार
जन्म समय _____: 03:35:00 घंटे
इष्ट _____: 55:28:17 घटी
स्थान _____: Gopalganj
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:28:00 उत्तर
रेखांश _____: 84:26:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:07:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 03:42:44 घंटे
वेलान्तर _____: -00:04:41 घंटे
साम्पातिक काल _____: 01:15:19 घंटे
सूर्योदय _____: 05:23:41 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:29:47 घंटे
दिनमान _____: 13:06:07 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 28:28:48 कर्क
लग्न के अंश _____: 04:08:15 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: पू०फाल्गुनी - 2
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: शिव
करण _____: कौलव
गण _____: मनुष्य
योनि _____: मूषक
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: टा-टाटा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1891	श्रावण	24
पंजाबी	संवत : 2026	श्रावण	31
बंगाली	सन् : 1376	श्रावण	30
तमिल	संवत : 2026	आदी	31
केरल	कोल्लम : 1144	कर्कदम	31
नेपाली	संवत : 2026	श्रावण	31
चैत्रादि	संवत : 2026	श्रावण	शुक्ल 2
कार्तिकादि	संवत : 2026	श्रावण	शुक्ल 2

पंचांग

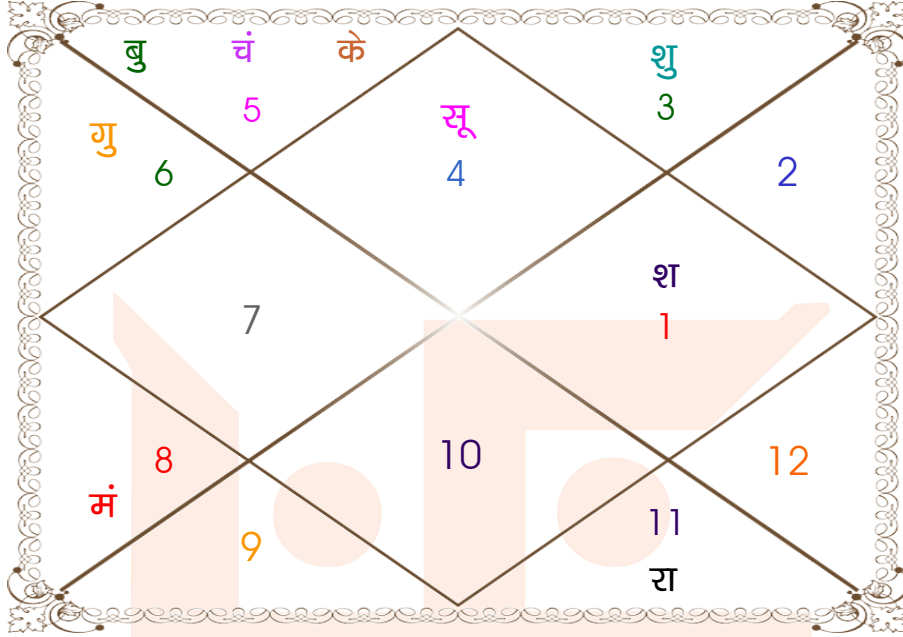
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 1
तिथि समाप्ति काल _____ : 12:34:11
जन्म तिथि _____ : 2
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मघा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 19:21:22 घंटे
जन्म योग _____ : पू०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग _____ : परिघ
योग समाप्ति काल _____ : 22:43:00 घंटे
जन्म योग _____ : शिव
सूर्योदय कालीन करण _____ : बव
करण समाप्ति काल _____ : 12:34:11 घंटे
जन्म करण _____ : कौलव
भयात _____ : 20:34:04
भभोग _____ : 64:55:04
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 13 वर्ष 8 मा 10 दि

घात चक्र

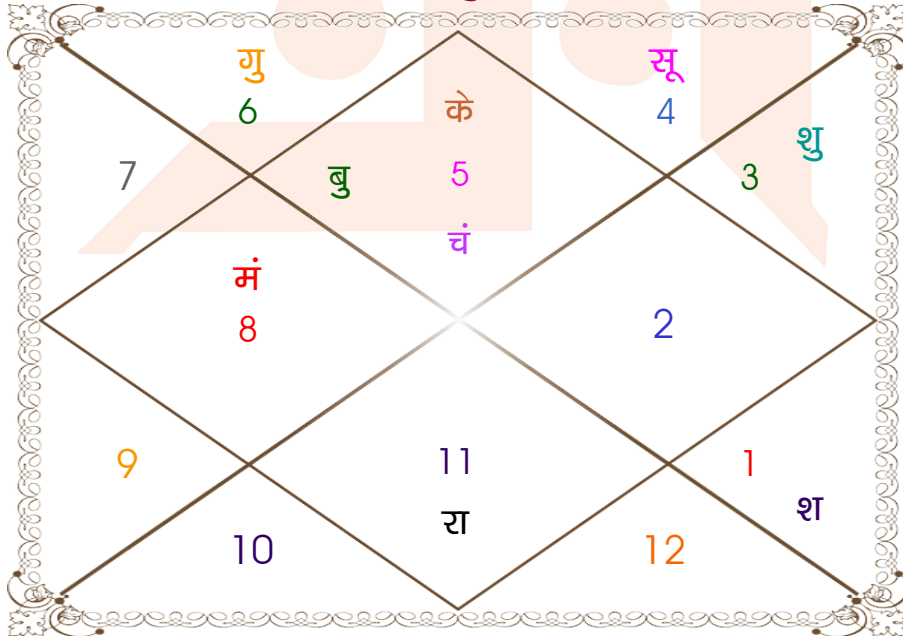
मास _____ : ज्येष्ठ
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : मूल
योग _____ : धृति
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : धनु
चन्द्र _____ : मकर
मंगल _____ : मकर
बुध _____ : तुला
गुरु _____ : कुम्भ
शुक्र _____ : मीन
शनि _____ : वृश्चिक
राहु _____ : मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

	श		शु
रा			सू ल
			के चं बु
	मं		गु

लग्न कुण्डली

	श		
शु			रा
	सू ल		
बु के	चं		मं
	गु		

विंशोत्तरी
शुक्र 13वर्ष 8मा 10दि
शुक्र

15/08/1969

26/04/2083

शुक्र	26/04/1983
सूर्य	25/04/1989
चन्द्र	26/04/1999
मंगल	25/04/2006
राहु	25/04/2024
गुरु	25/04/2040
शनि	26/04/2059
बुध	25/04/2076
केतु	26/04/2083

योगिनी

उल्का 4वर्ष 1मा 9दि
पिंगला

23/09/2025

24/09/2027

पिंगला	03/11/2025
धान्या	03/01/2026
भामरी	25/03/2026
भद्रिका	04/07/2026
उल्का	03/11/2026
सिद्धा	25/03/2027
संकटा	03/09/2027
मंगला	24/09/2027

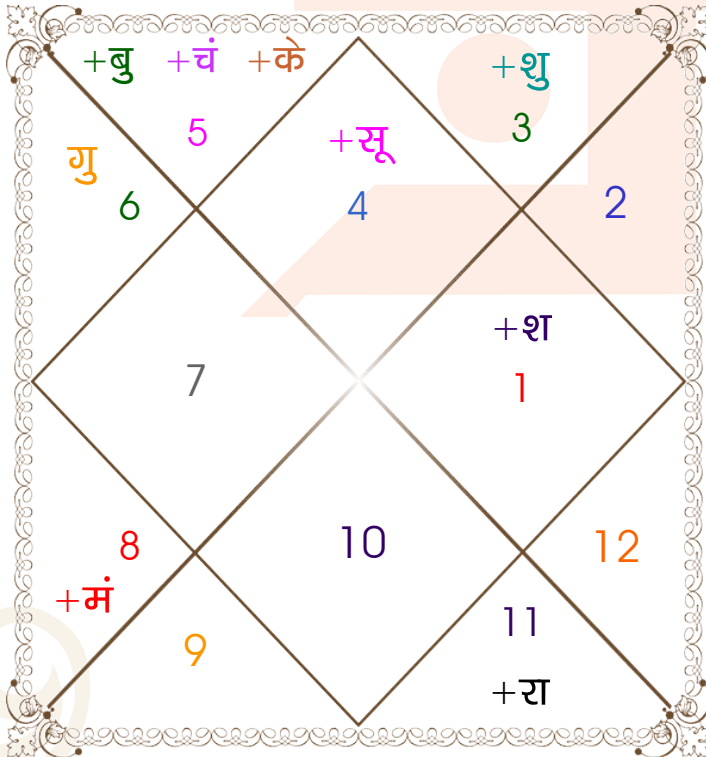
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न		कर्क	04:08:15	310:42:52	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	शनि	---
सूर्य		कर्क	28:28:48	00:57:40	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	मित्र राशि
चंद्र		सिंह	17:32:14	12:17:24	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	मंगल	मित्र राशि
मंगल		वृश्चि	16:52:22	00:24:53	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	स्वराशि
बुध		सिंह	19:21:41	01:33:16	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	मित्र राशि
गुरु		कन्या	11:28:27	00:11:00	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	मंगल	शत्रु राशि
शुक्र		मिथु	19:57:59	01:09:27	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	मंगल	मित्र राशि
शनि		मेष	15:28:47	00:00:40	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	नीच राशि
राहु	व	कुंभ	27:47:49	00:01:06	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व	सिंह	27:47:49	00:01:06	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	चंद्र	शत्रु राशि
हर्ष		कन्या	08:22:29	00:03:07	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	---
नेप		वृश्चि	02:31:13	00:00:14	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	---
प्लूटो		कन्या	00:17:15	00:01:57	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	राहु	---
दशम भाव		मीन	26:57:24	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	गुरु	--

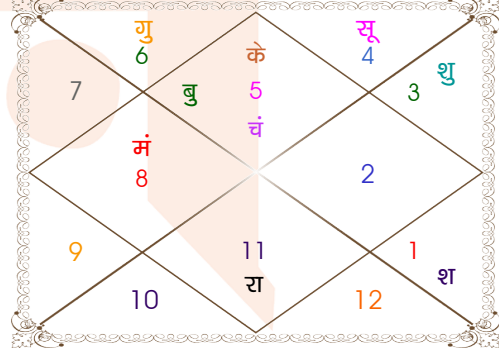
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:26:01

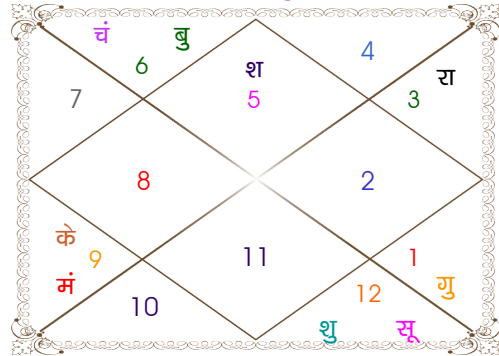
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 17:56:27	कर्क 04:08:15
2	कर्क 17:56:27	सिंह 01:44:38
3	सिंह 15:32:50	सिंह 29:21:01
4	कन्या 13:09:13	कन्या 26:57:24
5	तुला 13:09:13	तुला 29:21:01
6	वृश्चिक 15:32:50	धनु 01:44:38
7	धनु 17:56:27	मकर 04:08:15
8	मकर 17:56:27	कुम्भ 01:44:38
9	कुम्भ 15:32:50	कुम्भ 29:21:01
10	मीन 13:09:13	मीन 26:57:24
11	मेष 13:09:13	मेष 29:21:01
12	वृष 15:32:50	मिथुन 01:44:38

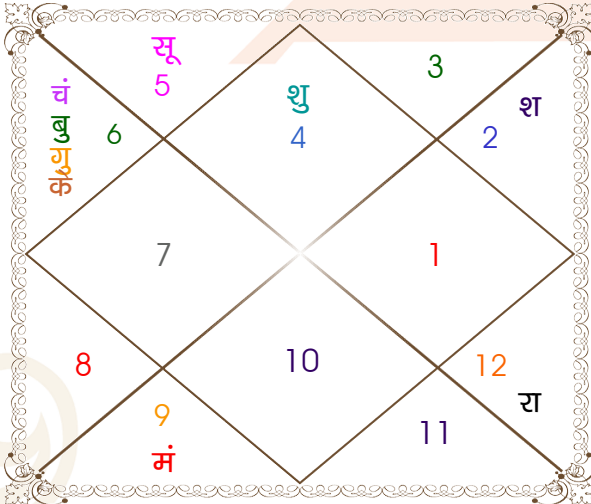
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कर्क	04:08:15
2	कर्क	27:54:23
3	सिंह	25:13:41
4	कन्या	26:57:24
5	वृश्चिक	01:01:58
6	धनु	03:56:07
7	मकर	04:08:15
8	मकर	27:54:23
9	कुम्भ	25:13:41
10	मीन	26:57:24
11	वृष	01:01:58
12	मिथुन	03:56:07

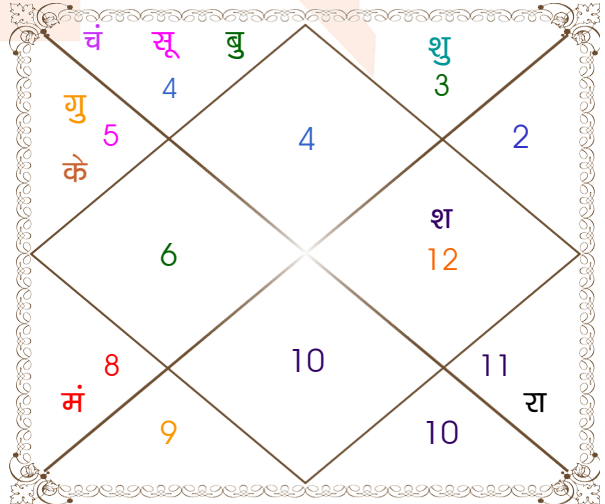
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



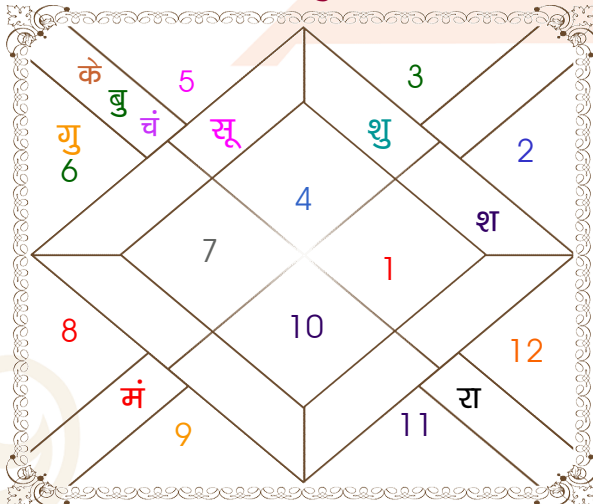
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----			----- अवस्था -----			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	बाल	मुदित	सभा	5.30	42 %
चंद्र	मातृ	मातृ	युवा	मुदित	नृत्यलिप्सा	5.03	73 %
मंगल	पुत्र	भातृ	युवा	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	4.54	79 %
बुध	भातृ	ज्ञाति	वृद्ध	मुदित	नृत्यलिप्सा	5.72	69 %
गुरु	कलत्र	धन	वृद्ध	खल	आगमन	4.41	27 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	वृद्ध	मुदित	नृत्यलिप्सा	5.75	60 %
शनि	ज्ञाति	आयु	युवा	भीत	आगम	0.05	53 %
राहु	---	ज्ञान	मृत	मुदित	नृत्यलिप्सा	0.00	11 %
केतु	---	मोक्ष	मृत	खल	नृत्यलिप्सा	0.00	11 %
कुल						30.80	

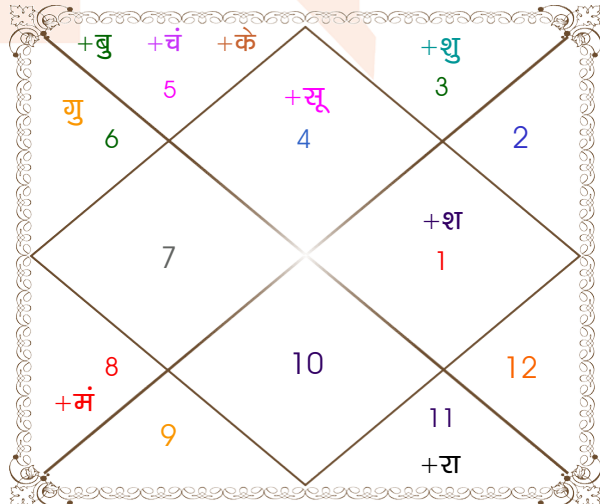
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 13 वर्ष 8 मास 10 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
15/08/1969	26/04/1983	25/04/1989	26/04/1999	25/04/2006
26/04/1983	25/04/1989	26/04/1999	25/04/2006	25/04/2024
00/00/0000	सूर्य 13/08/1983	चंद्र 23/02/1990	मंगल 22/09/1999	राहु 05/01/2009
00/00/0000	चंद्र 12/02/1984	मंगल 24/09/1990	राहु 09/10/2000	गुरु 01/06/2011
15/08/1969	मंगल 19/06/1984	राहु 25/03/1992	गुरु 15/09/2001	शनि 07/04/2014
मंगल 25/06/1970	राहु 13/05/1985	गुरु 25/07/1993	शनि 25/10/2002	बुध 24/10/2016
राहु 25/06/1973	गुरु 01/03/1986	शनि 24/02/1995	बुध 22/10/2003	केतु 12/11/2017
गुरु 24/02/1976	शनि 11/02/1987	बुध 25/07/1996	केतु 19/03/2004	शुक्र 12/11/2020
शनि 26/04/1979	बुध 19/12/1987	केतु 23/02/1997	शुक्र 19/05/2005	सूर्य 06/10/2021
बुध 23/02/1982	केतु 25/04/1988	शुक्र 25/10/1998	सूर्य 24/09/2005	चंद्र 07/04/2023
केतु 26/04/1983	शुक्र 25/04/1989	सूर्य 26/04/1999	चंद्र 25/04/2006	मंगल 25/04/2024

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
25/04/2024	25/04/2040	26/04/2059	25/04/2076	26/04/2083
25/04/2040	26/04/2059	25/04/2076	26/04/2083	00/00/0000
गुरु 13/06/2026	शनि 29/04/2043	बुध 21/09/2061	केतु 21/09/2076	शुक्र 25/08/2086
शनि 24/12/2028	बुध 06/01/2046	केतु 18/09/2062	शुक्र 21/11/2077	सूर्य 25/08/2087
बुध 01/04/2031	केतु 15/02/2047	शुक्र 19/07/2065	सूर्य 29/03/2078	चंद्र 25/04/2089
केतु 07/03/2032	शुक्र 16/04/2050	सूर्य 26/05/2066	चंद्र 28/10/2078	मंगल 15/08/2089
शुक्र 06/11/2034	सूर्य 29/03/2051	चंद्र 25/10/2067	मंगल 26/03/2079	00/00/0000
सूर्य 25/08/2035	चंद्र 27/10/2052	मंगल 21/10/2068	राहु 13/04/2080	00/00/0000
चंद्र 24/12/2036	मंगल 06/12/2053	राहु 11/05/2071	गुरु 19/03/2081	00/00/0000
मंगल 30/11/2037	राहु 12/10/2056	गुरु 16/08/2073	शनि 28/04/2082	00/00/0000
राहु 25/04/2040	गुरु 26/04/2059	शनि 25/04/2076	बुध 26/04/2083	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 13 वर्ष 7 मा 29 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु 25/04/2024 13/06/2026	गुरु - शनि 13/06/2026 24/12/2028	गुरु - बुध 24/12/2028 01/04/2031	गुरु - केतु 01/04/2031 07/03/2032	गुरु - शुक्र 07/03/2032 06/11/2034
गुरु 07/08/2024 शनि 08/12/2024 बुध 28/03/2025 केतु 13/05/2025 शुक्र 20/09/2025 सूर्य 29/10/2025 चंद्र 02/01/2026 मंगल 16/02/2026 राहु 13/06/2026	शनि 06/11/2026 बुध 18/03/2027 केतु 11/05/2027 शुक्र 12/10/2027 सूर्य 27/11/2027 चंद्र 12/02/2028 मंगल 06/04/2028 राहु 23/08/2028 गुरु 24/12/2028	बुध 21/04/2029 केतु 08/06/2029 शुक्र 24/10/2029 सूर्य 04/12/2029 चंद्र 11/02/2030 मंगल 01/04/2030 राहु 03/08/2030 गुरु 21/11/2030 शनि 01/04/2031	केतु 21/04/2031 शुक्र 17/06/2031 सूर्य 04/07/2031 चंद्र 01/08/2031 मंगल 21/08/2031 राहु 11/10/2031 गुरु 26/11/2031 शनि 19/01/2032 बुध 07/03/2032	शुक्र 16/08/2032 सूर्य 04/10/2032 चंद्र 24/12/2032 मंगल 19/02/2033 राहु 15/07/2033 गुरु 22/11/2033 शनि 25/04/2034 बुध 10/09/2034 केतु 06/11/2034
गुरु - सूर्य 06/11/2034 25/08/2035	गुरु - चंद्र 25/08/2035 24/12/2036	गुरु - मंगल 24/12/2036 30/11/2037	गुरु - राहु 30/11/2037 25/04/2040	शनि - शनि 25/04/2040 29/04/2043
सूर्य 21/11/2034 चंद्र 15/12/2034 मंगल 01/01/2035 राहु 14/02/2035 गुरु 25/03/2035 शनि 10/05/2035 बुध 21/06/2035 केतु 08/07/2035 शुक्र 25/08/2035	चंद्र 05/10/2035 मंगल 02/11/2035 राहु 14/01/2036 गुरु 19/03/2036 शनि 04/06/2036 बुध 12/08/2036 केतु 10/09/2036 शुक्र 30/11/2036 सूर्य 24/12/2036	मंगल 13/01/2037 राहु 05/03/2037 गुरु 20/04/2037 शनि 13/06/2037 बुध 31/07/2037 केतु 20/08/2037 शुक्र 16/10/2037 सूर्य 02/11/2037 चंद्र 30/11/2037	राहु 11/04/2038 गुरु 06/08/2038 शनि 22/12/2038 बुध 26/04/2039 केतु 16/06/2039 शुक्र 09/11/2039 सूर्य 23/12/2039 चंद्र 05/03/2040 मंगल 25/04/2040	शनि 16/10/2040 बुध 20/03/2041 केतु 23/05/2041 शुक्र 23/11/2041 सूर्य 17/01/2042 चंद्र 18/04/2042 मंगल 21/06/2042 राहु 03/12/2042 गुरु 29/04/2043
शनि - बुध 29/04/2043 06/01/2046	शनि - केतु 06/01/2046 15/02/2047	शनि - शुक्र 15/02/2047 16/04/2050	शनि - सूर्य 16/04/2050 29/03/2051	शनि - चंद्र 29/03/2051 27/10/2052
बुध 15/09/2043 केतु 11/11/2043 शुक्र 23/04/2044 सूर्य 11/06/2044 चंद्र 01/09/2044 मंगल 28/10/2044 राहु 25/03/2045 गुरु 03/08/2045 शनि 06/01/2046	केतु 29/01/2046 शुक्र 07/04/2046 सूर्य 27/04/2046 चंद्र 31/05/2046 मंगल 23/06/2046 राहु 23/08/2046 गुरु 16/10/2046 शनि 19/12/2046 बुध 15/02/2047	शुक्र 26/08/2047 सूर्य 23/10/2047 चंद्र 27/01/2048 मंगल 04/04/2048 राहु 24/09/2048 गुरु 26/02/2049 शनि 28/08/2049 बुध 08/02/2050 केतु 16/04/2050	सूर्य 03/05/2050 चंद्र 01/06/2050 मंगल 22/06/2050 राहु 13/08/2050 गुरु 28/09/2050 शनि 22/11/2050 बुध 10/01/2051 केतु 30/01/2051 शुक्र 29/03/2051	चंद्र 16/05/2051 मंगल 19/06/2051 राहु 14/09/2051 गुरु 30/11/2051 शनि 29/02/2052 बुध 21/05/2052 केतु 24/06/2052 शुक्र 29/09/2052 सूर्य 27/10/2052

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - मंगल 27/10/2052 06/12/2053	शनि - राहु 06/12/2053 12/10/2056	शनि - गुरु 12/10/2056 26/04/2059	बुध - बुध 26/04/2059 21/09/2061	बुध - केतु 21/09/2061 18/09/2062
मंगल 20/11/2052 राहु 20/01/2053 गुरु 15/03/2053 शनि 18/05/2053 बुध 14/07/2053 केतु 07/08/2053 शुक्र 13/10/2053 सूर्य 03/11/2053 चंद्र 06/12/2053	राहु 11/05/2054 गुरु 27/09/2054 शनि 11/03/2055 बुध 05/08/2055 केतु 05/10/2055 शुक्र 27/03/2056 सूर्य 18/05/2056 चंद्र 12/08/2056 मंगल 12/10/2056	गुरु 13/02/2057 शनि 09/07/2057 बुध 17/11/2057 केतु 10/01/2058 शुक्र 13/06/2058 सूर्य 30/07/2058 चंद्र 15/10/2058 मंगल 08/12/2058 राहु 26/04/2059	बुध 28/08/2059 केतु 18/10/2059 शुक्र 13/03/2060 सूर्य 26/04/2060 चंद्र 08/07/2060 मंगल 29/08/2060 राहु 08/01/2061 गुरु 05/05/2061 शनि 21/09/2061	केतु 12/10/2061 शुक्र 12/12/2061 सूर्य 30/12/2061 चंद्र 29/01/2062 मंगल 19/02/2062 राहु 14/04/2062 गुरु 02/06/2062 शनि 29/07/2062 बुध 18/09/2062
बुध - शुक्र 18/09/2062 19/07/2065	बुध - सूर्य 19/07/2065 26/05/2066	बुध - चंद्र 26/05/2066 25/10/2067	बुध - मंगल 25/10/2067 21/10/2068	बुध - राहु 21/10/2068 11/05/2071
शुक्र 10/03/2063 सूर्य 01/05/2063 चंद्र 26/07/2063 मंगल 24/09/2063 राहु 26/02/2064 गुरु 13/07/2064 शनि 24/12/2064 बुध 20/05/2065 केतु 19/07/2065	सूर्य 04/08/2065 चंद्र 30/08/2065 मंगल 17/09/2065 राहु 02/11/2065 गुरु 14/12/2065 शनि 01/02/2066 बुध 17/03/2066 केतु 04/04/2066 शुक्र 26/05/2066	चंद्र 08/07/2066 मंगल 07/08/2066 राहु 24/10/2066 गुरु 01/01/2067 शनि 24/03/2067 बुध 05/06/2067 केतु 05/07/2067 शुक्र 29/09/2067 सूर्य 25/10/2067	मंगल 15/11/2067 राहु 09/01/2068 गुरु 26/02/2068 शनि 23/04/2068 बुध 14/06/2068 केतु 05/07/2068 शुक्र 03/09/2068 सूर्य 21/09/2068 चंद्र 21/10/2068	राहु 10/03/2069 गुरु 12/07/2069 शनि 07/12/2069 बुध 18/04/2070 केतु 11/06/2070 शुक्र 13/11/2070 सूर्य 30/12/2070 चंद्र 17/03/2071 मंगल 11/05/2071
बुध - गुरु 11/05/2071 16/08/2073	बुध - शनि 16/08/2073 25/04/2076	केतु - केतु 25/04/2076 21/09/2076	केतु - शुक्र 21/09/2076 21/11/2077	केतु - सूर्य 21/11/2077 29/03/2078
गुरु 29/08/2071 शनि 07/01/2072 बुध 03/05/2072 केतु 21/06/2072 शुक्र 06/11/2072 सूर्य 17/12/2072 चंद्र 24/02/2073 मंगल 13/04/2073 राहु 16/08/2073	शनि 18/01/2074 बुध 07/06/2074 केतु 03/08/2074 शुक्र 14/01/2075 सूर्य 04/03/2075 चंद्र 25/05/2075 मंगल 21/07/2075 राहु 16/12/2075 गुरु 25/04/2076	केतु 03/05/2076 शुक्र 28/05/2076 सूर्य 05/06/2076 चंद्र 17/06/2076 मंगल 26/06/2076 राहु 18/07/2076 गुरु 07/08/2076 शनि 31/08/2076 बुध 21/09/2076	शुक्र 01/12/2076 सूर्य 22/12/2076 चंद्र 27/01/2077 मंगल 21/02/2077 राहु 26/04/2077 गुरु 21/06/2077 शनि 28/08/2077 बुध 27/10/2077 केतु 21/11/2077	सूर्य 27/11/2077 चंद्र 08/12/2077 मंगल 16/12/2077 राहु 04/01/2078 गुरु 21/01/2078 शनि 10/02/2078 बुध 28/02/2078 केतु 08/03/2078 शुक्र 29/03/2078

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

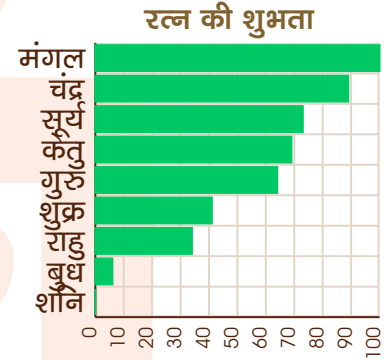
मूलांक	6
भाग्यांक	3
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	89%	धन, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	73%	स्वास्थ्य, धन
लहसुनिया	केतु	69%	धन, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	64%	पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	41%	व्यय, हानि, ग्रह क्लेश
गोमेद	राहु	34%	दुर्घटना, व्यावसायिक हानि
पन्ना	बुध	6%	धन हानि, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	0%	व्यावसायिक हानि, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	26/04/1983	61%	77%	100%	19%	64%	58%	0%	47%	75%
सूर्य	25/04/1989	86%	95%	100%	6%	70%	16%	0%	9%	56%
चंद्र	26/04/1999	80%	100%	100%	19%	64%	41%	0%	9%	56%
मंगल	25/04/2006	80%	95%	100%	0%	70%	41%	0%	9%	75%
राहु	25/04/2024	61%	77%	98%	6%	64%	52%	0%	55%	56%
गुरु	25/04/2040	80%	95%	100%	0%	77%	16%	0%	34%	69%
शनि	26/04/2059	61%	77%	98%	19%	64%	52%	9%	47%	56%
बुध	25/04/2076	80%	77%	100%	31%	64%	52%	0%	34%	69%
केतु	26/04/2083	61%	77%	100%	6%	64%	52%	0%	9%	81%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	23/07/1975-07/09/1977	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
शुभ
सम
शुभ

क्षेत्र

बुरा स्वास्थ्य
धन
पराक्रम
सन्तति कष्ट
भाग्योदय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्र कुंडली से चतुर्थ भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। लेकिन शास्त्रानुसार आपका मांगलिक दोष भंग हो जाता है इसलिए यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा इसके शुभ प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा साथ ही जीवन में अधिकांश रूप से सुखोपभोग की सामग्री से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा आनन्द पूर्वक इसका उपभोग कर सकेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

ऐसे मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब अवश्य हो सकता है परन्तु इससे किसी भी प्रकार की हानि नहीं होगी तथा विवाह सुखद वातावरण में सम्पन्न हो जाएगा। विवाहोपरान्त अपनी पत्नी से आपके मधुर संबंध रहेंगे। साथ ही आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य भी सामान्यतया अच्छा ही रहेगा जिससे कोई अनावश्यक व्यवधान या समस्या दाम्पत्य जीवन में उत्पन्न नहीं होगी।

चन्द्र कुंडली में चतुर्थ भाव में स्थित मंगल के प्रभाव से आप आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त होकर उनका उपभोग करेंगे। साथ ही आप सम्पत्ति या जायदाद को भी प्राप्त करेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव रहेगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से आप अपने कार्य में पूर्ण उन्नति करने में सफल रहेंगे। समाज में मान सम्मान, प्रतिष्ठा तथा यश भी अर्जित करेंगे। साथ ही एकादश भाव पर भी मंगल की दृष्टि आपकी आय साधनों में नित्य उन्नति दायक रहेगी। जिसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी तथा जीवन में कभी भी धनाभाव नहीं रहेगा। अतः सभी प्रकार से सुख सम्पन्न रहकर आप का जीवन प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या किसी ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष नियमानुसार भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपने दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ करेंगे तो आप जीवन में भाग्यशाली पुरुष होकर समस्त भौतिक सुख संसाधनों धन वैभव तथा मान सम्मान एवं कीर्ति प्राप्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके परस्पर संबंधों में भी प्रगाढ़ता रहेगी जिससे दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा तथा किसी भी प्रकार अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न नहीं होगी जिससे सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होता है।

इसके अतिरिक्त इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि कन्या की चन्द्र कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में ही न हो क्योंकि समान भावों में मंगल स्थित होने से आप सुख संसाधनों को प्राप्त करने में कठिनाई का अनुभव करेंगे जिससे मानसिक तनाव उत्पन्न होगा फलतः इससे आपका सुखी दाम्पत्य जीवन प्रभावित होगा। अन्य भावों में मंगल रहने से उसका प्रभाव शुभ रहेगा जिससे जीवन में अनावश्यक कष्ट तथा परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। इससे आपका दाम्पत्य जीवन शान्त तथा सुखी रहेगा एवं प्रसन्नता पूर्वक आप अपना सांसारिक, सामाजिक तथा परिवारिक जीवन व्यतीत करने में सफल रहेंगे। अतः सोच विचार कर एवं सावधानी पूर्वक निर्णय करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- शुक्र, बुध और राहु 2, 5, 9 या 12 वें भाव में स्थित है।

आपकी कुण्डली में बुध, शुक्र और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुण्डली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा

पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़तेरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कर्क लग्न की हैं। कर्क लग्न आपको संवेदनशील बना रहा है। चर लग्न आपको लगातार कार्य करने का स्वभाव दे रहा हैं। आपको जलीय स्थानों के नजदीकरहना अधिक प्रिय हो सकता हैं। लगातार कार्य करना आपका स्वभाव , बिना थके निरन्तर कार्य करना आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालता है। आप भावुक, धैर्यवान है, और कठिन से कठिन समय में भी घबराते नहीं हैं। कुछ विषयों पर आप जिद्धी भी हो जाते हैं। अपने स्वभाव के नकारात्मक पक्ष को छोड़ने का प्रयास आपको करना चाहिए। साथ ही आपको अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करना चाहिए। कार्य के घण्टों में से थोड़ा समय आराम के लिए भी निकालें। आप अत्यधिक भावनात्मक हैं इसलिए आपके निर्णय कई बार गलत भी हो जाते हैं।

फिर भी आप जब किसी काम को करने की ठान लेते हैं, तो उसे करके ही बैठते हैं।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। तथा इन भावों के स्वामियों को त्रिक भावेश के नाम से जाना जाता है। त्रिक भाव, भावेश व इन भावों में बैठे ग्रह स्वयं में किसीन किसी प्रकार की अशुभता लिये होते हैं। यही कारण है की ये सभी आपके जीवन में कष्ट और बाधाओं का कारण बन सकते हैं। जिसमें छटा भाव रोग, ऋण और शत्रुओं से कष्ट देता है, इसका स्वामी जिस भाव में जाता है, उसके शुभ फलों में कुछ न कुछ कमी अवश्य करता है। जिसके फलस्वरूप आपको षष्ठ भाव के स्वामी या इस भाव में स्थित ग्रहों की महादशा-अन्तर्दशाओं में भाव सम्बंधित रोग, ऋण या शत्रुओं के द्वारा शारीरिक या मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

6, 8 व 12 भावों में अष्टम भाव विशेष अशुभता लिए होते हैं। इस भाव का स्वामी अष्टमेश, जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता है। अष्टम भाव अशुभता, बाधा और पाप का भाव है। और इस भाव या इस भाव के स्वामी से किसी भी भावेश का सम्बन्ध होना, भावेश की शुभता में कमी कर अशुभता को बढ़ाता है। तीसरा और अंतिम त्रिक भाव, द्वादश भाव है जिसे व्यय भाव भी कहा जाता है। द्वादश भाव से हानि, टैक्स, निद्रा, शैथ्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष का विचार किया जाता है। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव के विषयों में अशुभता लाते हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न में षष्ठ भाव व नवम भाव के स्वामी गुरु हैं। षष्ठेश गुरु आपका मामा-मौसी से बैर करा सकता है। संतान सुख में कमी कर सकता है तथा संतान रोगों के प्रभाव में शीघ्र आ सकती है, बुद्धि और विवेक का समय पर उपयोग नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त ऋण आदि विषयों में शत्रु बाधक हो सकते हैं।

सप्तम व अष्टम भाव के शनि की यह स्थिति जीवन साथी से प्राप्त होने वाले सुखों में कमी, सरकारी क्षेत्रों व आजीविका क्षेत्रों से अल्प लाभ, धन संचय कठिन, कुटुंबका न्यून सुख, विद्या बुद्धि से अल्प लाभ व संतान सुख में बाधक बनता है।

द्वादश व तृतीय भाव के स्वामी बुध हैं। बुध आपके लग्न के लिए अशुभ ग्रहों की श्रेणी में आते हैं। बुध की यह स्थिति आपको अधिक व्ययों से परेशान, पारिवारिक सुख में न्यूनता, धन संचय दुष्कर, शत्रु संघर्ष से हानि के योग बना सकता है।

आपकी कुंडली में राहु अष्टम भाव में स्थित है। आपके पारिवारिक सुखों में कमी, पैतृक संपत्ति नाश, संघर्ष, सौतेली माता से मतभेद, की स्थिति बन सकती है। आप अनुचित तरीकों से लाभार्जन करने का प्रयास कर सकते हैं। धन वृद्धि करने के लिए अनैतिक नियमों का सहारा आप ले सकते हैं। अष्टम भाव में राहु आपके क्रोध भाव में वृद्धि कर रहा है, आप को व्यर्थ विषयों पर बातें करने से बचना चाहिए। कुटुम्बियों से त्याज्य एवं अपमानित, कभी लाभ और कभी हानि, निष्ठुर, कई बार हानि पाने वाला तथा स्वजनों से दूर रहने वाला।

शुक्र आपकी कुंडली के द्वादश भाव में स्थित है, आपको स्वार्थ भावना का त्याग करना चाहिए, व्यर्थ के कामों में आप अत्यधिक व्यय कर सकते हैं, आत्मीय जनों से मनमुटाव हो सकता है, विरोधियों के कपट को न समझते हुए आप उनसे आत्मीयता रखें। जीवन साथी की भावनाओं को आहात करने से बचें। या आपको विवाहेत्तर संबंधों में रुचि हो सकती है, अवस्था बढ़ने के साथ साथ आप पर मोटापा हावी हो सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 4, 5, 6, 7, 8 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करें। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शांत स्वभाव एवं दृढ़तापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करने वाले होते हैं। इनकी प्रवृत्ति भावुक होती है एवं निश्चल प्रेम एवं स्नेह के भाव का ये प्रदर्शन करते हैं। जीवन में समस्त सुखोपभोग के साधनों से ये युक्त रहते हैं तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करते हैं। धर्म के प्रति ये श्रद्धालु रहते हैं तथा समाज या देश सेवा के प्रति इनकी पूर्ण इच्छा रहती है। साथ ही दूसरे लोगों की भावनाओं को समझने में दक्ष रहते हैं। राजनीति या सरकारी क्षेत्रों में उच्चाधिकार प्राप्त पद को अपनी योग्यता बुद्धिमता एवं पराक्रम से प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं जिससे समाज में इनको इच्छित मान सम्मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि मिलती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक शांति भी बनी रहेगी। आप एक विद्वान एवं बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुद्धिमतापूर्वक अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे आर्थिक स्थिति आपकी अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सफल होंगे।

यदा कदा जीवन में आपको उतार चढ़ाव का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु स्वबुद्धि पराक्रम एवं साहस से आप समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में समर्थ होंगे। साथ ही समस्त भौतिक सुखों का उपभोग करके एक प्रतिष्ठित एवं प्रसिद्ध व्यक्ति के रूप में समाज में आदरणीय रहेंगे।

लग्न में सूर्य की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक स्थिति भी अच्छी रहेगी। आपके स्वभाव में उत्साह पराक्रम एवं तेजस्विता का भाव विद्यमान होगा तथा अपने समस्त सांसारिक महत्व के कार्यों को पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगे जिनमें आपको वांछित सफलता प्राप्त होगी तथा सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश में अभिवृद्धि होगी। अपने कार्यकलापों को आप अत्यंत ही चतुराई परिश्रम एवं ईमानदारी से पूर्ण करेंगे परन्तु यदा कदा क्रोध के भाव का प्रदर्शन कर सकते हैं तथा चंचलता भी मन में रहेगी। अतः ऐसी प्रवृत्तियों की आपको उपेक्षा करनी चाहिए।

मित्रवर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे। सरकारी सेवा या राजनीति के क्षेत्र में अपनी पराक्रमी तेजस्विता तथा बुद्धिमता के द्वारा सम्मानजनक पद प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं। आपके मन में परोपकार का भाव भी रहेगा तथा समय समय पर अन्य जनों को अपने ओर से सेवा तथा सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। अपने कार्य क्षेत्र में आपकी श्रेष्ठता रहेगी तथा उचित सम्मान एवं ख्याति प्राप्त होगी। साथ ही आप भेद भाव को भी नहीं मानेंगे तथा सभी लोगों के साथ समानता का व्यवहार करेंगे।

इस प्रकार आप पराक्रमी तेजस्वी यशस्वी तथा बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा अपने उपरोक्त गुणों के द्वारा जीवन में भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए समय व्यतीत करेंगे।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में सिंह राशि उदित हुई है तथा सूर्य इस राशि का स्वामी है। अतः इसके प्रभाव से आप अधिक बोलना पसन्द नहीं करेंगे तथा अधिकांश समय शान्त रहना ही आपको रुचिकर लगेगा तथा अवसरानुकूल ही वार्तालाप करना पसंद करेंगे। वैभवशाली वस्तुओं की प्राप्ति तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यों को सम्पन्न करने में आप सर्वदा उत्सुक तथा तत्पर रहेंगे। आप कभी कभी शीघ्र ही क्रोधित भी होंगे लेकिन शीघ्र ही शांत भी हो जाएंगे। पारिवारिक शान्ति तथा खुशहाली के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे तथा यत्नपूर्वक पारिवारिक जनों को पूर्ण सुविधाएं प्रदान करेंगे। पैतृक सम्पत्ति की आपको अवश्य प्राप्ति होगी। साथ ही बहुमूल्य वस्तुओं से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे।

जीवन में आपको जमीन जायदाद संबंधी लाभ होगा तथा गृह एवं वाहन आदि के स्वामित्व को भी प्राप्त करेंगे। सामाजिक जनों को आकर्षित तथा प्रभावित करने के लिए आप मधुर वाणी का प्रयोग करेंगे। साथ ही आपके स्पष्ट तर्कों से सभी लोग आपसे सहमत रहेंगे। परिवार की सुख शान्ति पर आप प्रचुर मात्रा में व्यय करेंगे धर्म के प्रति भी आपकी श्रद्धा रहेगी तथा परिवार में धार्मिक कार्यक्रम या उत्सव समय समय पर होते रहेंगे। परिवार के अतिरिक्त अन्य जनों का पालन पोषण करने में भी आप समर्थ रहेंगे। इस प्रकार आप एक जागरूक, धार्मिक तथा परोपकारी प्रवृत्ति से युक्त होकर समाज में मान सम्मान अर्जित करके अपना समय व्यतीत करेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में सर्व सुखों से आप युक्त होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। भौतिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में अपना अनुकूल स्तर बनाए रखेंगे।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको माता के द्वारा विशिष्ट सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा इससे आपके वैभव एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी। विवाह के बाद पत्नी के सहयोग एवं प्रभाव से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे।

आपको जीवन में उत्तम एवं विस्तृत क्षेत्र में स्थित गृह भी प्राप्ति होगी तथा सुख पूर्वक इसमें निवास करेंगे। आपका घर सर्व प्रकारेण आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित होगा तथा इसकी सुन्दरता एवं आकर्षण बनाए रखने में व्यक्तिगत रूप से तत्पर होंगे तथा अन्य पारिवारिक जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त आपको उत्तमवाहन की भी प्राप्ति होगी जिसका आप आनंद पूर्वक उपभोग करने में समर्थ होंगे।

आपकी माता जी शिक्षित बुद्धिमान एवं तेजस्वी महिला होगी तथा पारिवारिक जनों पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा एवं सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट स्नेह का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको वांछित नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होगी। आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा वं सम्मान का भाव रखेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

विद्या अध्ययन के क्षेत्र में आप परिश्रमी होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने में सफल होंगे। प्रारंभिक कक्षाओं से ही आप अच्छे अंक अर्जित करेंगे तथा स्नातक परीक्षा काफी अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा भविष्य को उज्ज्वल बनाने में समर्थ होंगे। आप व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा में वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं क्योंकि आपमें परिश्रम तथा बुद्धिमता दोनों भाव विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त मित्र संबंधी एवं अन्य लोग भी आपकी सफलता से प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा मंगल भी स्वराशि में होकर पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्य कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आपकी बुद्धि में तीक्ष्णता भी होगी तथा आप शीघ्र निर्णय लेने में समर्थ होंगे एवं कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान आसानी से कर लेंगे। मंगल की पंचमभावास्थ स्थिति के प्रभाव से वैदिक एवं धर्म शास्त्र में आपकी रुचि कम ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान में पूर्ण रुचि होगी। आपका भौतिक या औषधि विज्ञान प्रिय विषय होगा तथा परिश्रम पूर्वक इसके ज्ञानार्जन में तत्पर रहेंगे तथा इसमें आप नवीन सिद्धांतों का भी प्रतिपादन कर सकते हैं। इससे समाज में आपके सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा एक विद्वान के रूप में आपका प्रभुत्व भी स्थापित होगा।

पंचमभाव में स्वगृही मंगल के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रुचि होगी तथा आपका प्रेम मर्यादित एवं आदर्शवादी होगा। लेकिन प्रेम के क्षेत्र में आप भावुकता के भाव की उपेक्षा करेंगे। आपका प्रेम आत्मिक संतुष्टि के लिए होगा तथा अनावश्यक दिखावे की न्यूनता रहेगी। अतः आपके प्रेम की परिणिति विवाह के रूप में हो सकती है।

पंचमभाव में मंगल के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर सन्तति की प्राप्ति होगी तथा कन्या सन्तति की अपेक्षा पुत्र सन्तति की अधिकता होगी। वे सभी बुद्धिमान पराक्रमी एवं योग्य होंगे तथा अपने इन्ही गुणों से जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता-पिता के प्रति उनका आज्ञाकारिता का भाव होगा तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उनकी सलाह से ही सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभावना एवं विश्वास का भाव बना रहेगा। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशेष लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान पिता के द्वारा ही करवा लेंगे। लेकिन श्रद्धा एवं सम्मान का भाव दोनों के लिए बराबर होगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में वे तन-मन-धन से माता-पिता की सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। अतः इस संदर्भ में आप भाग्यशाली समझे जा लेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपके बच्चे योग्य एवं प्रतिभावान होंगे तथा प्रारंभ से ही अच्छे अंको में परीक्षाएं उत्तीर्ण करके अपने लिए उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उचित प्रबन्ध करेंगे एवं अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। इसके साथ ही बच्चे स्वभाव से व्यवहार कुशल होंगे जिससे अन्य जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे तथा बच्चों को यथोचित स्नेह एवं प्रोत्साहन प्रदान करेंगे। इससे आपको बच्चों पर गौरव की अनुभूति होगी।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है सामान्यतया मकर राशि की सप्तम भाव में स्थिति के प्रभाव से जातक का सहयोगी चंचल वात प्रकृति एवं धनवान होता है परन्तु सौम्य एवं जलीय ग्रह चन्द्र के प्रभाव से वह सुशील सहिष्णु एवं बुद्धिमान होता है तथा अपने कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी चंचल तथा सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को शांत मन से सम्पन्न करेंगी वह एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अपने उत्कृष्ट कार्य कलापों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। कला एवं संगीत के प्रति भी उनकी रुचि होगी। चन्द्रमा जैसे शुभ ग्रह के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव रहेगा एवं समाज तथा परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी जिससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपकी पत्नी गौर वर्ण की आकर्षक एवं सुंदर महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। उनकी शारीरिक संरचना भी उत्तम रहेगी तथा अन्य अंग प्रत्यंगों की पुष्टता एवं सुडौलता से उनके सौन्दर्य की अभिवृद्धि होगी एवं इसके लिए वह आधुनिक सुख संसाधनों का भी प्रयोग करेंगी। जलीय राशि मकर एवं जलीय ग्रह चन्द्रमा के प्रभाव से उनमें आयु के साथ साथ स्थूलता भी आ सकती है। साथ ही कला एवं सुंदर वस्तुओं के प्रति भी उनके मन में प्रबल आकर्षण होगा।

आपका विवाह संबंधियों के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा महिला संबंधियों का इसमें विशेष योगदान रहेगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे के मनोभावों का पूर्ण आदर करेंगे। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आपसी सहमति तथा सहयोग से पूर्ण करेंगे। इससे संबंधों में मधुरता रहेगी तथा परस्पर विश्वास का भाव भी बना रहेगा।

आपका विवाह सामान्य परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से उनकी स्थिति साधारण रहेगी। सास ससुर से आपके सामान्य संबंध अच्छे रहेंगे तथा वे भी आपको यथोचित स्नेह तथा नैतिक सहयोग प्रदान करेंगे। इससे आपका परस्पर मेल मिलाप भी होता रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की पूर्ण सेवा तथा श्रद्धा की भावना रहेगी तथा सुख दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगी। देवर एवं ननदों को भी वह अपने मृदु व्यवहार एवं वाणी से प्रभावित तथा प्रसन्न रखेंगी तथा वे भी उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी एवं माता या अन्य स्त्री वर्ग के साथ साझेदारी से वांछित लाभ एवं उन्नति होगी तथा आपस में विश्वसनीयता भी बनी रहेगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्मसमय में दशमभाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही शनि भी अपनी नीच राशि में दशमभाव में ही स्थित है। मेष राशि अग्नि तत्व एवं शनि वायु तत्व युक्त ग्रह है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक क्रिया प्रधान होगा तथापि इसमें परिश्रम की भी बहुलता रहेगी। साथ ही समय समय पर इसमें परिवर्तन भी करेंगे। ऐसे सामयिक परिवर्तनों से आपके कार्यक्षेत्र में उतार चढ़ाव आते रहेंगे जिससे आप मानसिक असन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आपके लिए वायुसेना, जहाजरानी, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम, भारी उद्योग या कर्मचारी, संदेशवाहक या दूत कार्य, राजनीति, विद्युत विभाग तथा प्रशासकीय कार्यों या मेडिकल क्षेत्र में आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी। यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में अपनी आजीविका का चयन करेंगे तो आपको मनोवांछित सफलता मिलेगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में समर्थ होंगे। अतः आपको यत्नपूर्वक इन्हीं विभागों एवं क्षेत्रों में अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में वांछित उन्नति तथा धनार्जन की दृष्टि से आपको लोहा, प्रेस, भारी उद्योग, फैक्टरी, विद्युत उपकरणों का निर्माण, पेट्रोलपम्प, शराब का व्यापार, खेती एवं बागवानी का क्षेत्र शुभ रहेगा साथ ही राजनीति के क्षेत्र में भी आप अल्प समय में ही वांछित उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। अतः यदि आप उपरोक्त क्षेत्रों में व्यापार का प्रारंभ करें तो इसमें आप पूर्ण उन्नति एवं लाभ अर्जित करने में सफल होंगे तथा आर्थिक स्थिति में भी सुदृढ़ता रहेगी।

दशम भावस्थ नीच शनि के प्रभाव से जीवन में वांछित उन्नति सफलता एवं सम्मान अर्जित करने में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। यदि आप परिश्रम पूर्वक ईमानदारी से अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे तो आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होगी तथा लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही सामाजिक यथा संस्थाएं क्लब आदि में भी आप कोई पदाधिकारी हो सकते हैं। यद्यपि यथोचित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्ति में विलम्ब होगा लेकिन इससे आपको हतोत्साहित नहीं होना चाहिए।

आपके पिता तेजस्वी पराक्रमी एवं आकर्षक व्यक्तित्व के व्यक्ति होंगे। साथ ही उनमें क्रोध के भाव की भी प्रबलता होगी। आपके प्रति वे पूर्ण वात्सल्य का भाव रखेंगे तथा कार्यक्षेत्र में सम्मानित स्तर प्रदान करने के लिए आपकी शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबंध करेंगे। लेकिन कार्यक्षेत्र में उन्नति आप अपनी योग्यता एवं परिश्रम से ही करेंगे तथा पिता के प्रभाव की इसमें न्यूनता होगी। आप दोनों के आपसी संबंधों में भी विशेष मधुरता नहीं होगी तथा वैचारिक एवं सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव होगा। अतः आपको चाहिए कि ऐसे अवसरों की उपेक्षा ही करें तभी संबंधों में अनुकूलता आ सकती है। इसके अतिरिक्त आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अपनी ही इच्छा से सम्पन्न करेंगे एवं पिता की कोई सलाह या सहयोग अल्प मात्रा में ही लेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वादश भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वितीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा। आपको अपने व्यापार में सफलता प्राप्त के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। अष्टमस्थ राहु के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। अतः इस समय के अन्तराल में आपको अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए और कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

02 जून के बाद समय अच्छा हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आपको अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। लग्न स्थान का गुरु नयी विचारधारा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में अच्छी उन्नति करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यरहेगा। द्वादश स्थान केगुरु धनागम में रुकावट उत्पन्न करेंगे। जिससे आर्थिक उन्नति में कमी हो सकती है। इस समय के अंतराल में आपको निवेश या किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है, परन्तु आपको मातुल पक्ष से लाभ होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपको रुका हुआ धन वापस मिल सकता है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा या आर्थिक स्थिति को सुधारने में इनका पूर्ण सहयोग होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप अपनी भौतिक सुख सुबिधा पर भी पैसा खर्च करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी और आपको ससुराल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह

के दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपके परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत उत्तम रहेगा। अष्टम स्थान का राहु ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद करा सकता है।

02 जूनके बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आपकी पत्नी के साथ आपकेसम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान कीदृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थगुरुपर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित कुछ चिन्ताएं हो सकती हैं। आपके बच्चों का स्वास्थ्य व शिक्षा-दीक्षा प्रभावित हो सकती है। अतः उनके स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें।

02 जून के बाद गुरु के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रुचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है। तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केगुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना सकते हैं। मधुमेह रोगियों को अधिक परहेज की आवश्यकता है। गुरु ग्रह के वायु तत्व राशि में होने के कारण संक्रमण, सांस व पेट संबंधित बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है।

02 जून के बाद गुरु का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा रहेगा। षष्ठ स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को मनोनुकूल सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को वर्षारम्भ में नौकरी मिल सकती है।

02 जून केबाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढ़ाई लिखाई में सब से आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए समय काफी अनुकूल है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है। द्वादशस्थगुरु विदेश यात्रा के शुभ योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आपकी विदेश यात्रा होगी।

02 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि लम्बी यात्रा के योग बना रही है। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी दर्शा रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थगुरु एवं नवमस्थ शनि के प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। 02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आपगुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। मन्त्र जाप कर आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाएंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वाह्न में मीनस्थ शनि नवम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं नवम भाव में आजाएंगे। मकर राशि का राहु इस वर्ष सप्तम भाव में रहेगा। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत बढ़िया रहेगा। व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से नयी योजनाओं से लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं। आपका भाग्य भी आपके अनुकूल रहेगा। आप कम समय में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को इच्छित लाभ होगा।

साझेदारी में काम करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है। 26 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वरिष्ठ लोगों या बड़े अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा, आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वाह्न में कर्जें इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी धन का व्यय हो सकता है।

26 नवम्बर के बाद सामाजिक कार्यों में व धार्मिक कार्यों में पैसा खर्च कर सकते हैं। भाइयों या ससुराल पक्ष से भी धन लाभ हो सकता है। अचानक धन लाभ होने के भी योग बन रहे हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। सप्तमस्थ राहु के प्रभाव से जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

26 जून के बाद परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा। पिता के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद आपके सामाजिक मान संमान में और बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

संतान के लिये वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है। विवाह योग्य है तो विवाह हो जाएगा।

26 नवम्बर के बाद दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा नहीं रहेगा। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। मन में अच्छे विचार आएंगे व आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे और प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

26 जून के बाद लग्न स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित हो सकता है। मौसम जनित बीमारी या आलस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। 26 जून के प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त हो सकती है। तकनीकी शिक्षा के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी। 03 जून के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे। 26 नवम्बर के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रूचि बढ़ेगी जिससे आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आप का अटूट विश्वास रहेगा। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 26 जून के बाद मन्त्र सिद्धी व गुप्त विद्याओं की ओर आपका रुझान बढ़ेगा।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन राहु ग्रह का दान आपके लिए लाभप्रद रहेगा।



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। नवम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। भाइयों का सहयोग मिलेगा। सप्तम स्थान के राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं परन्तु आप उसे भी अपने बौद्धिक बल से अनुकूल बना लेंगे।

24 मई के बाद व्यवसाय में सफलता के अच्छे अवसर मिलेंगे। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो 24 जुलाई के बाद अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आमदनी के नये स्रोत मिलने कि उम्मीद है। अनुभवी व्यापारिक एवं वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलने से आप अपने व्यापार में और अधिक सुधार करेंगे। आपका मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा। आप बचत करने में सफल रहेंगे। सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी के स्वास्थ्य पर भी व्यय करा सकते हैं।

फरवरी के बाद आपको रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पिता का अहम सहयोग होगा। मातुल पक्ष से भी लाभ प्राप्त होगा। मांगलिक कार्यों में भी पैसे खर्च हो सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ सामाजिक उन्नति के साथ होगा। तृतीयस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ-चढ कर भाग लेंगे। फरवरी के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

सप्तमस्थ राहु आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण आपके मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। गर्भाधान के लिए समय शुभ है।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा चल रहा है यदि बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। इस समयान्तराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। अतः स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही आपके लिए अच्छी नहीं होगी।

राहु ग्रह के गोचर के साथ आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा। यदि पहले से किसी बीमारी से ग्रसित हैं तो उससे छुटकारा मिल सकता है। छठे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए सामान्य रहेगा। आपको लगातार अथक परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि शिक्षा की दृष्टि से उत्तम है।

24 मई के बाद षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार मिल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों को ब्राण्ड नेम मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से लम्बी यात्राएं व तीर्थ यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होगी।

चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि, नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह की दृष्टि नवम स्थान पर पड़ रही है, जिसके कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में आकृष्ट होगा। आप गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। समय समय पर गरीबों की सहायता भी करेंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमानजी को लड्डू का भोग लगाकर गरीबों में बांट दें।
- दुर्गाजी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।
- गौ सेवा करें या गौशाला में चारा दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यवसाय के लिए उत्तम रहेगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। बड़े अधिकारी व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठस्थ राहु के कारण सारे विरोधी शान्त होंगे। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए अति उत्तम रहेगा। व्यवसाय में उन्नति के लिए नये-नये तरीके अपनाएंगे व सफल भी होंगे। आपको लाभ मिलता रहेगा। प्रोपर्टी डीलर या कमीशन पर कार्य करने वाले व्यक्तियों की अच्छी उन्नति होगी। छठे स्थान का राहु आपको ब्राण्ड नेम भी दिला सकता है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख मिलेगा। भौतिक सुख सुविधा पर आप अधिक खर्च करेंगे। आय के स्रोत और उत्तम होंगे। निवेश के लिए समय अच्छा चल रहा है। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की स्थिति पैतृक सम्पत्ति प्राप्ति के योग बना रही है। अचानक धनागम का योग बनेगा जिससे आर्थिक स्थिति सुधरेगी।

08 अगस्त के बाद आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में भाईयों एवं परिवार के लोगों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। इस समय के अंतराल में आपका रुका हुआ या फंसा हुआ पैसा भी मिल सकता है। इस अवधि में वसीयत प्राप्त होने की भी संभावना बन रही है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अति उत्तम रहेगा। चतुर्थ स्थान का गुरु पारिवारिक सुख प्रदान करने वाला है। सुख शांति का वातावरण बना रहेगा। मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग बन रहे हैं। यदि कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

तृतीयस्थ मंगल के प्रभाव से सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप

अपनी सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय होंगे। माता-पिता के साथ भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध मधुर होंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। उच्च शिक्षा के लिए समय उत्तम नहीं है परन्तु प्रतियोगिता परीक्षा में आप सफल होंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे।

आपके बच्चों का किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे की उन्नति होगी। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छठे स्थान के राहु रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ा रहे हैं जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि किसी कारण से आप बीमार भी होते हैं, तो आपकी सेहत शीघ्र ही अच्छी हो जाएगी। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी।

इस समय के अंतराल में आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा जिससे रोगप्रतिरोधक शक्ति और अतिरिक्त मानसिक ऊर्जा प्राप्त होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में आगे रहेंगे। अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में और अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अहं भाव ना आने दें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। आपके माता-पिता को धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

29 मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। 05 अक्टूबर के बाद तीर्थ यात्रा या परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आपकी धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बढ़ेगी। किसी तीर्थयात्रा पर जा रहे हैं तो उसको योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें, अन्यथा उसमें व्यवधान आ सकता है। 25 अगस्त के बाद पूरे परिवार के साथ कोई विशेष आयोजन कर सकते हैं जैसे- भगवती जागरण, माता की चौकी इत्यादि।

- अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना करें और उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं और केतु मन्त्र का पाठ करें।



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि दशम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु छठे भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना है। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। फरवरी से आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने काम को पूरा करके ही रहेंगे

17 अप्रैल से समय व्यावसायिक स्तर आपके लिए बेहतर होने वाला है। आपको पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। भले ही गुरु एवं राहु की युति थोड़ी अड़चने देगी किन्तु सफलता आपके कदम चूमेगी। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आय भाव पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा। 04 फरवरी से आपकी आर्थिक उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। वित्तीय मामलों में आपको निराशा हाथ लगेगी और हानि का सामना करना पड़ेगा। आपकी राह में अवरोध उत्पन्न किया जा सकता है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं।

01 मई से आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे यह समय आपके लिए लाभकारी रहेगा। यदि अनपेक्षित ही कोई अच्छा सौदा आपकी झोली में आ गिरे, तो चौंकिए मत अपितु उसका लाभ उठाएं। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके सामने कई लाभकारी मौके आएंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर मन में चिंता रह सकती है। परिवार के प्रत्येक मसले पर आपको बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है।

मई से समय अनुकूल हो रहा है। परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा, क्योंकि आप बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो परिवार के लिए हितकर होंगे। परिवार के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान में गुरु चण्डाल योग संतान हानि का योग बना रहा है।

गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। अप्रैल के बाद सन्तान के लिए समय अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से सामान्य रहेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप आलसी हो जाएंगे और आपके रवैये में भी परिवर्तन आएगा। आपको अपने खान-पान और दिनचर्या पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है ताकि आप इस तरह की भावनाओं से बच सकें। आपके जीवन में इस साल कुछ अच्छे पल भी आएंगे किन्तु ऐसा भी समय आएगा जब आप अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन से सम्बंधित चिंताओं से घिरे रहेंगे

स्वस्थ रहने के लिए आप योग और ध्यान का सहारा लें और प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएं। स्वास्थ्य को लेकर यह साल वैसे तो आपके लिए ठीक-ठाक ही रहेगा लेकिन अपने खान-पान को लेकर सतर्क रहें। पंचम स्थान में गुरु एवं राहु की युति उदर रोग दे सकती है। अतः मसालेदार या तली हुई वस्तुओं का सेवन कम से कम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रथम मास श्रेष्ठतम रहेगा परन्तु 04 फरवरी के बाद से समय प्रभावित हो रहा है। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यवसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

गुरु के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। विदेश यात्रा के भी प्रबल योग बन रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप गुरु मन्त्र भी ले सकते हैं और उस मन्त्र की साधना भी कर सकते हैं। पूरे परिवार सहित घरेलू सुख शान्ति के लिए पूजा करेंगे और धार्मिक यात्रा भी करेंगे। अपने घर में श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं और महालक्ष्मी मन्त्र का पाठ करें।

- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- राहु ग्रह का दान करें और उसके मन्त्र का पाठ करें।